P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-2* October- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बड़ोदरा, जिला, जांजगीर-चांपा, छत्तीसगढ़ की सामाजिक-आर्थिक स्थिति-एक अध्ययन

Socio-economic Status of Vadodara, District, Janjgir-Champa, Chhattisgarh- A study

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 23/10/2021, Date of Publication: 24/10//2021

प्रदीप कुमार एक्का
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
अम्बिकापुर सरगुजा
(छ.ग.) भारत

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य निश्चित रूप से इस रिपोर्ट को अलमारियों में रखना नहीं है, बल्कि इसका उपयोग परियोजना क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने के लिए करना है, अर्थात् 3 तहसीलों (डभरा, खरसिया और रायगढ़) के 24 गांवों में 1833 परिवार शामिल हैं। इस अध्ययन में जांजगीर-चांपा और रायगढ़ जिलों में, और विभिन्न आवश्यकताओं, अवसरों और चुनौतियों का जवाब देने के लिए सुझाव प्रस्तुत किये हैं। स्पष्ट रूप से, इस क्षेत्र के निवासियों के सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के लिए डीबी पावर लिमिटेड कंपनी, सरकार और विकास एजेंसियों द्वारा कुछ पथ-प्रदर्शक पहल की गई हैं। हालाँकि सामुदायिक विकास की कुछ कठोर और पुरानी प्रथाएँ हैं, जो न केवल अपनी बढ़त और उद्देश्य खो चुकी हैं, बल्कि दृष्टिकोण और बुनियादी ढांचे को बनाए रखने के मामले में भी दायित्वहीन बन गई हैं। इसलिए यह अध्ययन सभी अध्येताओं को क्षेत्र में रहने वाले लोगों के समग्र विकास के लिए उपयुक्त रणनीति बनाने के लिए आमंत्रित करता है।

The purpose of this study is certainly not to put this report in the shelves, but to use it to understand the socio-economic situation in the project area, i.e. 1833 families in 24 villages of 3 tehsils (Dabhra, Kharsia and Raigarh). Huh. The study presents suggestions in Janjgir-Champa and Raigad districts, and to respond to various needs, opportunities and challenges. Clearly, some path-breaking initiatives have been taken by DB Power Limited Company, Government and development agencies for the socio-economic and cultural development of the residents of the region. However, there are some rigid and age-old practices of community development, which have not only lost their edge and purpose but have also become irresponsible in terms of approach and infrastructure to be maintained. Hence this study invites all the scholars to devise suitable strategies for the holistic development of the people living in the area.

मुख्य शब्द:बड़ोदरा, जिला, जांजगीर-चांपा, छत्तीसगढ़ की सामाजिक-आर्थिक स्थिति।
Keywords: Socio-Economic Status of Vadodara, District, Janjgir-Champa, Chhattisgarh.

प्रस्तावना

छत्तीसगढ़ राज्य 1 नवंबर, 2000 को बनाया गया था, और जब से इसके पुनर्निर्माण के लिए सरकार के साथ-साथ स्वैच्छिक एजेंसियों द्वारा गतिविधियों की झड़ी लगा दी गई है। सरकार ने इस संबंध में एक अच्छी शुरुआत की है, और मुख्य रूप से संस्थागत और ढांचागत व्यवस्था पर ध्यान केंद्रित किया है। दूसरी ओर, गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) ने राज्य में मानव और सामाजिक विकास पर कई तरह से प्रतिक्रिया दी है। हालांकि इन पहलों की सराहना की जाती है और इन्हें जारी रखने की आवश्यकता है, फिर भी, विकास के हस्तक्षेप के लिए दीर्घकालिक और व्यवस्थित दृष्टिकोण की कमी रही है, विशेष रूप से गरीब झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों और समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्ग के लिए। इसके लिए, यह महसूस किया गया है कि लोगों की मुक्ति और विकास के कार्य में शामिल ग्राहकों और प्रमुख हितग्राहियों की उचित समझ न केवल प्रतिक्रियाओं को प्राथमिकता देने और रणनीति बनाने में मदद करती है, बल्कि संबंधित समूहों के बीच समन्वय लाने में भी मदद करती है। इसलिए, सूखे या अकाल जैसी आपातकालीन स्थितियों को छोड़कर, जैसा कि हुआ था, जब त्वरित-सेवा दृष्टिकोण उचित था, सामान्य परिस्थितियों में एक अधिक स्थायी और समेकित विकास दृष्टिकोण अनिवार्य हो जाता है।

Scanned by CamScanner

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-2* October- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

क्रियाविधि

सर्वेक्षण कार्य के माध्यम से संबोधित समस्याओं और तथ्यों को समझने के लिए क्षेत्र की आवश्यकता के आकलन के अभ्यास के लिए एक वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता होती है। सभी सर्वेक्षण किए गए तथ्यों और आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए, यह वर्तमान अध्ययन निम्नलिखित उद्देश्यों की रूपरेखा तैयार करता है।

उद्देश्य

1. विस्तृत जानकारी एकत्र करना और क्षेत्र की स्थिति के अनुसार उनका विश्लेषण करना।
2. संसाधन आधार और उसके उपयोग के पैटर्न को समझना।
3. जीवन जीने के स्वदेशी तरीकों का पता लगाना।
4. शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे; सामाजिक-आर्थिक जीवन पद्धति के संदर्भ में लोगों की जरूरतों और आवश्यकताओं को शामिल करते हुए एक ढांचा तैयार करना।
5. सकारात्मक (उपलब्धियों) और नकारात्मक (समस्याओं) की वर्तमान स्थिति का पता लगाना और भविष्य में कार्यान्वयन के लिए विचारोत्तेजक जरूरतों और उपायों को प्रस्तुत करना।

परिकल्पना

1. इस विषय पर किए गए सीमित अध्ययनों के आधार पर और ऊपर उल्लिखित उद्देश्यों को प्रमाणित करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं को उनकी वैधता का परीक्षण करने के लिए तैयार किया गया था।
2. सहभागी दृष्टिकोण परियोजना क्षेत्र में भौतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के संदर्भ में विकासात्मक कार्यक्रम के प्रभाव में अंतर लाता है।
3. किसी भी विकास कार्यक्रम के तहत विकसित किसी भी प्रणाली के सार के लिए लोगों की भागीदारी महत्वपूर्ण है।
4. इस कार्यक्रम के माध्यम से अर्जित आय के वैकल्पिक स्रोत प्रवासन दर को कम करने में मदद करते हैं।
5. विकासात्मक कार्यक्रमों की अवधारणा के प्रति सामुदायिक दृष्टिकोण, स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के रूप में ग्राम स्तर पर लोगों के संगठन को बढ़ावा देता है।
6. विशेष रूप से बचत और ऋण समूहों में महिलाओं की भूमिका महिला सशक्तिकरण के रास्ते खोलती है।
7. उपरोक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए जांजगीर-चांपा और रायगढ़ जिलों को वर्तमान अध्ययन के क्षेत्र के रूप में चुना गया था। वर्तमान संदर्भ में अध्ययन का महत्व निम्नलिखित कारणों से है
8. जांजगीर-चांपा जिले में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 15300 (11.61) और अनुसूचित जाति की 29600 (22.47) आबादी है। इसी तरह, रायगढ़ जिले में कुल 179744 (14.20ः) एसटी आबादी और 447703 (35.38ः) एससी आबादी है।
9. ये जिले छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित हैं और अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की बहुसंख्यक आबादी के रूप में जाने जाते हैं।
10. ये वे जिले हैं जहां भास्कर फाउंडेशन द्वारा व्यापक रूप से विकासात्मक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जा रहा है। साथ ही कई योजनाएं सरकारी और गैर सरकारी एजेंसियों द्वारा भी चलाई जा रही हैं।
11. जांजगीर-चांपा जिले में 08 तहसीलों और 09 ब्लॉकों में कुल 1317431 व्यक्ति और 06 तहसील और 09 ब्लॉक रायगढ़ जिले के अधिकार क्षेत्र में आते हैं, जिनकी कुल जनसंख्या 2001 की जनगणना के अनुसार 1265084 है।

अनुसन्धान रेखा

वर्तमान क्षेत्र में संचालित गतिविधियाँ, विशेष रूप से सामुदायिक विकास कार्यक्रम के संदर्भ में, अभी भी कई प्रश्न अनुत्तरित हैं। इस विचार के साथ और विषयों में अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए, वर्तमान आवश्यकता मूल्यांकन रिपोर्ट एक वर्णनात्मक डिजाइन पर आधारित है। एक ओर, इसका उद्देश्य अस्पष्टीकृत क्षेत्रों का पता लगाना है और दूसरी ओर यह लोगों की वास्तविक जरूरतों का पता लगाने के लिए सीमित साहित्य के आधार पर तैयार की गई परिकल्पनाओं की वैधता की जांच करने का इरादा रखता है।

सैम्पलिंग

1. एक उद्देश्यपूर्ण स्तरीकृत यादृच्छिक नमूनाकरण प्रक्रिया का पालन करते हुए ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करने के लिए 29 गांवों से नमूने लिए गए थे। नमूना लेने के लिए निम्नलिखित चरणों का पालन किया गया
2. जांजगीर-चांपा जिले में 09 ब्लॉक हैं, जो 08 तहसीलों के अंतर्गत आते हैं, जबकि रायगढ़ जिले में 09 तहसील और 09 ब्लॉक हैं। इन 17 तहसीलों में से 03 को एक

Scanned by CamScanner

रायगढ़ से और 02 को जांजगीर-चांपा से इस प्रयोजन के लिए संयंत्र क्षेत्र के अधिकार क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया था।

3. जांजगीर-चांपा से डभरा और खरसिया और रायगढ़ जिले की रायगढ़ तहसील की तहसीलों का चयन संयंत्र-अधिकार के आधार पर किया गया था।
4. आवश्यकता मूल्यांकन उद्देश्य के लिए सर्वेक्षण कार्य के लिए रायगढ़, और जांजगीर-चांपा के जिलों, क्रमशः 16 और 13 गांवों का चयन किया गया था।
5. चयनित गांवों में परिवारों की संख्या के आधार पर नमूना लिया गया जो गांव के आकार और साक्षात्कारकर्ता की उपलब्धता के आधार पर 50-70 से भिन्न था। नमूनों का चयन इस तरह किया गया कि वे पूरे गांव और संयंत्र क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।

डेटा संग्रह के तरीके

उद्देश्यों को पूरा करने के लिए वर्तमान शोध कार्य के लिए दो स्रोतों से डेटा एकत्र किया गया था। वो थे

1. प्राथमिक स्रोत और
2. द्वितीय स्रोत

प्राथमिक स्रोत
व्यक्तिगत साक्षात्कार

एक साक्षात्कार अनुसूची की सहायता से समुदाय से प्राथमिक डेटा का संग्रह किया गया था। इसका उद्देश्य क्षेत्र के नमूना परिवारों से, परिवार की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं, सामुदायिक संगठन, विकास कार्यक्रमों के तहत की जाने वाली गतिविधियों और लोगों के जीवन पर उनके प्रभाव के बारे में जानकारी एकत्र करना था। इसके अलावा, परियोजना के कार्यान्वयन के बारे में जानकारी और अन्य विवरणों को क्रॉसचेक करने और पूरक करने के लिए परियोजना धारकों के साथ अनौपचारिक साक्षात्कार और चर्चा की गई।

फोकस ग्रुप डिस्कशन

चूंकि अध्ययन किए गए महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक समुदाय की भागीदारी और पहल थी, इन पहलुओं पर डेटा फोकस समूह चर्चा (एफजीडी) के माध्यम से एकत्र किया गया था।

प्रत्येक नमूना गाँव में आयोजित किया गया था। परियोजना कार्यान्वयन एजेंसी (पीआईए) द्वारा किए गए भौतिक कार्यों को देखने और समझने के लिए समुदाय के सदस्यों के साथ साइटों पर एक या दो बार दौरा किया गया था। इसने FGD की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने में मदद की।

FGD के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा ने दो उद्देश्यों की पूर्ति की रू

1. इसने फोकस समूह को सामुदायिक भागीदारी, कार्यान्वयन, और गतिविधियों के प्रभाव और क्षेत्र में और आसपास के लोगों की जरूरतों के मुद्दों पर चर्चा करने और सामूहिक समझ रखने में मदद की।
2. इसने व्यक्तिगत साक्षात्कार के दौरान एकत्र किए गए डेटा और FGD के दौरान एकत्र किए गए डेटा को क्रॉस-चेक करने में मदद की।

अवलोकन

उपरोक्त विधियों के माध्यम से डेटा एकत्र करते समय, अधिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और उपरोक्त डेटा को पूरक करने के लिए गैर-प्रतिभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया था। पीआईए द्वारा किए गए भौतिक कार्यों को समझने के लिए साइट विजिट के दौरान यह अधिक सहायक था।

द्वितीय स्रोत

द्वितीयक स्रोतों से डेटा परियोजना की अवधारणा और संदर्भ, पीआईए की भूमिका और परियोजना गतिविधियों के कार्यान्वयन पर एकत्र किया गया था। प्रकाशित, पुस्तकों और पत्रिकाओं, अप्रकाशित लेखों और दस्तावेजों से मदद ली गई। जिला स्तर पर संबंधित सरकारी विभाग के अभिलेखों को भी उक्त उद्देश्य के लिए संदर्भित किया गया था।

अध्ययन की सीमा

1. शोध के वर्तमान अंश की कुछ सीमाएँ हैं जिन्हें शोधकर्ता बेझिझक साझा कर सकता है
2. डेटा संग्रह की प्रक्रिया के दौरान गतिविधियों के तकनीकी पक्ष पर एकत्र करना मुश्किल था। लोगों के उचित ज्ञान की कमी अक्सर पूरी तस्वीर पाने के लिए एक बाधा के रूप में काम करती थी। शोधकर्ताओं ने अन्य स्रोतों से उस जानकारी को इकट्ठा करके और जमीनी हकीकत से उसकी जांच कर इस पर काबू पाने की कोशिश की।
3. परिवारों के मुखिया की अनुपलब्धता कभी-कभी डेटा संग्रह की प्रक्रिया को लंबा कर देती है। उपरोक्त उद्देश्य के लिए बार-बार दौरे डेटा संग्रह की गति को तोड़ रहे थे।
4. FGD के दौरान कुलीन सदस्यों का प्रभुत्व दूसरों को आगे आने और जानकारी प्रकट करने की अनुमति नहीं दे रहा था। हालांकि, इस बात का ध्यान रखा गया

Scanned by CamScanner

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-9* ISSUE-2* October- 2021
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

5. चर्चा को संरचित करके और ऐसे सदस्यों को आमंत्रित करके बहुत कम प्रोफ़ाइल वाले लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करें।
6. पीआईए द्वारा उचित दस्तावेज़ीकरण की कमी के कारण, एक विस्तृत चित्र को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करना मुश्किल था। ज्यादातर मामलों में, शोधकर्ता को डेटा विश्लेषण के उद्देश्य से इसे संकलित करना और एक आकार देना था।

परियोजना क्षेत्र की जनसंख्या प्रोफ़ाइल

सर्वेक्षण किए गए 24 गांवों में औसतन 1415 आबादी पर परियोजना क्षेत्र में कुल 33952 आबादी शामिल है। कुल जनसंख्या में से 16555 पुरुष और 17357 महिला आबादी क्षेत्र में निवास कर रही है। उल्लेखनीय है कि सबसे कम जनसंख्या खैरपाली में पायी गयी जबकि सर्वाधिक (2396) जनसंख्या टुण्डरी ग्राम में निवास करती पायी गयी।

पंचायत सदस्यों की संख्या की बात करें तो कुल 121 तोलों के अंतर्गत आने वाले कुल 250 वार्डों के लिए कुल 2936 सदस्य चुने गए हैं। कुल सदस्यों में से 1605 पुरुष और 1331 महिला सदस्य निर्वाचित हुए हैं। सबसे कम पंचायत सदस्य सोंडाका में पाए गए जबकि सबसे ज्यादा सदस्य क्रमशरू तेमटेमा (1550) और पांड्रीपानी (1100) में निर्वाचित हुए। क्षेत्र में कुल 250 वार्डों की पहचान की गई है, जिनमें से सरायपाली में कम से कम 3 टोला (टोला) की पहचान की गई है, जबकि टुंडरी और कांवली में 20-20 की पहचान की गई है।

घरेलू प्रोफ़ाइल

ऊपर दी गई तालिका से यह स्पष्ट है कि कुल 5880 परिवार निवास कर रहे हैं, जबकि भालुचुआन में कम से कम या न्यूनतम 24 घरों की पहचान की गई है, जबकि सबसे अधिक घरों (783) की पहचान टुंड्री में की गई है। ओबीसी आबादी क्षेत्र में सबसे अधिक (3829) पाई गई है, इसके बाद एससी आबादी (2569) और एसटी आबादी (1847) है। हालांकि, क्षेत्र में सामान्य लोगों (178) की सबसे कम आबादी पाई गई।

ग्राम-वार, टुंड्री में ओबीसी आबादी की अधिकतम संख्या है, जबकि नवपारा में सबसे अधिक (800) एससी आबादी है, और एसटी आबादी (200) भी है। अधिकांश सामान्य (50) आबादी कोमो गांव में रहती है। लगभग 85ः निवासी कच्चे घरों में रहते हैं।

जिन घरों में विकलांग पाए गए, उनकी संख्या 204 थी। सबसे अधिक संख्या 20, 22 और 23 घर क्रमशः नवापारा, कोमो और कंवाली गांवों में पाए गए। जहां तक कामकाजी आबादी का सवाल है, इस समूह के अंतर्गत 16993 (21-60 आयु वर्ग के) लोग (50ः) आते हैं, जो इस क्षेत्र के लिए एक अच्छा संकेत है। ग्राम पंड्रिपानी में, वयस्कों और बुजुर्गों के लिए स्कूल जाने वाले सभी व्यक्ति निरक्षर पाए गए हैं, जबकि सबसे अधिक निरक्षर लोग, भालुचुआन और कोमो में 762, इसके बाद कोमो में 496 हैं।

भूमिहीन किसानों के संबंध में 1673 घरों को भूमिहीन के रूप में पहचाना गया है और सबसे अधिक 350, 200, और 192 घरों में क्रमशरू बसनाझोर, जैमुरा और बड़ादरा में पाया गया है।

व्यावसायिक प्रोफ़ाइल

बयांग, खैरपाली, बसनपाली, नवापारा, जैमुरा, बैसपाली, जुनवानी, कोमो, अकोलजमुरा जैसे गांवों में, 50% से अधिक लोग कृषि में शामिल पाए जाते हैं, जबकि गांवों में, करुमहुआ, टुंड्री, खैरमुंडा, डुमरपाली, कैरपाली, सोनबासा, तेमटेमा, पंड्रिपानी, 20 % से कम लोग कृषि में लगे हुए पाए गए हैं।

लगभग सभी गांवों में, लोग अपनी आजीविका और अतिरिक्त आय के लिए कृषि या उद्योग के क्षेत्र में अपना श्रम कार्य करते हैं। हालाँकि, खैरमुंडा, डुमरपाली और नवापारा जैसे गाँवों में कुल 80%लोग श्रम के काम के लिए जाते हैं, जबकि बयांग, करुमहुआ, खैरपाली, टुंड्री, सारापाली, केनापाली और जैमुरा जैसे गाँवों में, लगभग 20% लोग काम के लिए जाते हैं। यह खैरमुंडा, डुमरपाली और बसापाली जैसे गांवों में फसल उत्पादन नगण्य है। बड़दरा में कुल 576 हेक्टेयर, टुंड्री में 1240 हेक्टेयर और जैमुरा में 505 हेक्टेयर में फसल का उत्पादन होता है।

वन विवरण

बायंग, करुमहुआ, खैरपाली, खैमुंडा, डुमरपाली, बसनपाली, नवापारा, सरायपाली, केनापाली, जैमुरा, भालुचुआन, तेमटेमा, पंड्रिपानी, कोमो, अकोलजामोरा जैसे गांवों में कोई वन भूमि नहीं है। बड़दरा में कुल 36 हेक्टेयर, टुंड्री में 80 हेक्टेयर और सोनबासा में 168 हेक्टेयर भूमि को वन भूमि के रूप में चिह्नित किया गया है।

सिंचाई के लिए लोग नहरों, कुओं, बोरवेल और सार्वजनिक कुओं का उपयोग करते हैं।

Scanned by CamScanner

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-2* October- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सार्वजनिक वितरण प्रणाली

बयांग, खैरपाली, खैरमुंडा, डुमरपाली, बसनपाली, नवापारा, केनापाली, बसंझोर, फूलबंधिया, खैरपाली, सोनबासा, जुनवानी, तेमटेमा, पांड्रीपानी, अकोलजमोरा जैसे गांवों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) या किसी भी प्रकार की सोसायटी नहीं है। इसी तरह, तेमटेमा और पंड्रिपानी में कोई पंचायत भवन नहीं है;

तेमटेमा, पांड्रीपानी और अकोलजमोरा में नोकम्युनिटी हॉल। फिर भालुचुआं में आंगनबाड़ी नहीं है, लेकिन सोनबासा में निजी आंगनबाड़ी है।

शिक्षण सुविधाएं

सभी लक्षित गांवों में सरकार द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालय हैं। इसके अलावा टुंड्री, जैमुरा और बैसपाली में 3 निजी स्कूल हैं। 20 गांवों में मिडिल स्कूल चल रहे हैं। बसनपाली, पंड्रिपानी, सरायपाली और खैरपाली गांवों में कोई माध्यमिक विद्यालय नहीं है। हाई स्कूल और हायर सेके.डरी स्कूल क्रमशः टुंड्री और सोनबासा में स्थित हैं। परियोजना क्षेत्र में एक भी कॉलेज नहीं है, इसलिए मैट्रिक के बाद छात्रों को या तो खरसिया या रायगढ़ या कहीं और जाना पड़ता है।

स्वास्थ्य सुविधाएं

प्रत्येक गाँव में एक पशु चिकित्सालय है अर्थात टुंड्री, जैमुरा और जुनवानी। बाकी गांवों में यह सुविधा नहीं है। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र टुंड्री, जैमुरा, सोनबासा, जुनवानी और कोमो में स्थित हैं, जबकि जुनवानी में, अस्पताल-क्लीनिक सरकारी और निजी {ो=ों द्वारा संचालित है। बायंग, खैरमुंडा, डुमरपानी, कंवाली, नवापारा, खैरपाली, बैसपाली, तेमटेमा, पंड्रिपानी जैसे गांवों में न तो शौचालय की सुविधा है और न ही टेलीविजन, टेलीफोन, टेलीग्राफ, डाकघर, इंटरनेट की सुविधा है। पुलिस चैकी खरसिया, डभरा, रायगढ़ और धूपदेवपुर गांवों में है.

बैंक विवरण और अन्य सुविधाएं

क्षेत्र के लोग कलेक्ट्रेट के काम के लिए रायगढ़ और जांजगीर जाते हैं, जबकि प्रखंड में काम के लिए खरसिया, डभरा, रायगढ़ जाते हैं. क्षेत्र में स्थित ग्रामीण बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, खरसिया, ग्रामीण बैंक चैपल, ग्रामीण बैंक धुरकोट जैसे कुछ बैंक हैं जो लोगों को सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। भूमि विकास बैंक रायगढ़ और खरसिया में एक-एक स्थित है।

साप्ताहिक बाजार सभी गांवों में मिलता है, जबकि बीज भंडार और खाद रायगढ़, खरसिया, जैमुरा, डभरा, धुरकोट और बघौद में मिलते हैं।

संगठनों

ग्राम स्तर के संगठनों के संबंध में, बसंझौर, फूलबंधिया और खैरपाली में किसान संगठन बनते हैं। सरायपाली, बसंझोर, खैरपाली, कोमो और अकोलजमोरा ने ग्राम विकास समितियों (वीडीसी) का गठन किया है, जबकि अन्य 19 गांवों में वीडीसी नहीं है। सहकारी समिति केनापाली, जैमुरा, सोनबासा और कोमो में मौजूद है, जबकि नवापर, भालुचुआन, बैसपाली, जुनवानी, तेमटेमा और अकोलजामोरा में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) का गठन और सुदृढ़ीकरण किया जाना है। एक एनजीओ की मौजूदगी कोमो के ग्रामीणों द्वारा महसूस की जाती है। परियोजना क्षेत्र में कुछ कल्याणकारी कार्यक्रम एवं सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। जमुरा और सोनबासा को छोड़कर सभी लक्षित गांवों में वृद्धावस्था पेंशन दि;े जाने की आव";कता है। जैमुरा, कोमो और अकोलजमोरा को छोड़कर सभी गांवों में विधवा पेंशन भी दी जा रही है। इसी प्रकार, जैमुरा को छोड़कर सभी लक्षित गांवों में भी शारीरिक रूप से विकलांग पेंशन चल रही है।

एसजीएसवाई की योजना वर्ष 2010-2011 में केवल टुंड्री गांव में लागू की गई है और 200 लाभार्थियों की पहचान की गई है। ;हॉ रोजगार गारंटी योजना है

2255 लाभार्थियों के साथ 10 गांवों में लागू किया जा रहा है जबकि अकेले गांव टुंड्री में इस योजना के 500 लाभार्थी हैं। 14 गांवों में यह कार्यक्रम लागू नहीं किया जा रहा है। 368 लाभार्थियों वाले कुल 18 गांवों ने इंदिरा आवास योजना का सकारात्मक अनुभव किया है, जबकि 6 गांवों ने अभी तक इस योजना का अनुभव नहीं किया है। पूर्ण साक्षरता कार्यक्रम केवल 7 गांवों में चल रहा है, जबकि 17 गांवों ने अभी तक कार्यक्रम का अनुभव नहीं किया है। केवल 5 गांवों में वाटरशेड कार्यक्रम चल रहा है जबकि 7 गांवों में मध्याह्न भोजन कार्यक्रम चल रहा है।

Scanned by CamScanner

नागरिक सुविधाएं

गांवों में नागरिक सुविधाओं के संबंध में यह अनुभव किया गया है कि अधिकांश गांव बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। गांवों में स्ट्रीट लाइट की सुविधा नहीं है। इसी तरह, बसनपाली (बड़े आकार के टैंक) और बयांग, नवापारा, बसनाझार और जैमुरा (छोटे आकार के टैंकों के साथ) को छोड़कर अधिकांश गांवों में पीने के पानी की सुविधा नहीं है। इसी तरह, हैंडपंपों के पानी का उपयोग सभी गांवों में पीने के लिए किया जाता है, लेकिन बैसपाली और अकोलजमोरा जैसे गांवों में यह सुविधा भी नहीं है। नलजल सुविधा अकेले बैसपाली में है। सार्वजनिक टेलीफोन खैरपाली और बैसपाली में उपलब्ध हैं। पेट्रोल पंप 23 गांवों के लिए 2 किलोमीटर से 17 किलोमीटर के दायरे में स्थित है, जबकि यह खैरमुंडा से 25 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। खैरमुंडा और डुमरपाली में सड़क की सुविधा नहीं है।

10 गांवों में खाना पकाने के लिए गैस कनेक्शन का उपयोग किया जाता है जबकि 14 गांवों में अभी तक इसका अनुभव नहीं हुआ है! बसनाझार और पंड्रिपानी में जलाऊ लकड़ी का उपयोग किया जाता है। 7 ग्रामीण अलग-अलग उद्देश्यों के लिए जंगल पर निर्भर हैं जबकि 17 गांव इस पर निर्भर नहीं हैं।

निष्कर्ष

संक्षेप में सर्वेक्षण किए गए आँकड़ों के अनुसार, एक स्पष्ट तस्वीर सामने आती है कि परियोजना क्षेत्र परिवहन, स्कूलों और अस्पतालों से संबंधित नागरिक सुविधाओं और बुनियादी ढांचे के मामले में बहुत पिछड़ा हुआ है। ग्राम स्तर पर कई गांवों में सामुदायिक भवन नहीं है और कई ग्राम पंचायतों में पंचायत भवन नहीं हैं। सरकारी कार्यों, विपणन, बैंकिंग व्यवसाय आदि के लिए लोगों को जिला और ब्लॉक मुख्यालयों में 15 से 30 किलोमीटर की दूरी तय करने के लिए बहुत अधिक यात्रा करनी पड़ती है। लोग आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से भी अपने अधिकारों और शक्तियों से अवगत नहीं हैं।देखा जाता है कि Ûग्रामि.ा सुस्त होते हैं, उन्हें प्रेरक और प्रेरक प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। उन्हें ज्ञान और कई तरह के रास्ते दिए जाने चाहिए जहां वे अपने व्यवसाय के क्षेत्र का चयन कर सकें। उनमें से अधिकांश कृषि कार्य और कृषि संबंधी श्रम कार्य में लगे हुए हैं। आय और बचत का स्तर बहुत कम है। उन्हें सरकारी योजनाओं के दोहन में और पहल करने की जरूरत है। अब जबकि डीबी पावर लिमिटेड परियोजना क्षेत्र में सक्रिय रूप से शामिल है, अतः लोगों को सहयोग करना चाहिए और उनकी सभी गतिविधियों में भाग लेना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *परियोजना क्षेत्र का प्राथमिक सर्वेक्षण, 2011।*
2. *जनगणना 2001*
3. *स्लम इंडिया की जनसंख्या, 2001*
4. *छत्तीसगढ़ स्टडी, 2002 - इंडियन सोशल इंस्टीट्यूट, दिल्ली एंड जेवियर इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट एक्शन एंड स्टडीज, जबलपुर।*
5. *मुख्य चिकित्सा अधिकारी, रायपुर, 2005।*
6. *इंटरनेट - बींजंजपेहंतीवदसपदम.पद - 2011*
7. *अंतरिम अनंतिम डेटा, 2011।*

Scanned by CamScanner